

## बौद्ध धर्म का उद्भव और प्रचार—प्रसार में सम्राट अशोक का योगदान

डॉ. राकेश कुमार  
इतिहास विभाग।

### शोध आलेख सार

सम्राट अशोक एक ऐसे महापुरुष हैं जिन्हें भारत और विश्व इतिहास में बौद्ध धर्म में अनुयायी और महान प्रचारक का स्थान प्राप्त है। सम्राट अशोक एक महान योद्धा भी था। कलिंग विजय इसका प्रमाण है। उस युद्ध में भयंकर रक्तपात को देखकर अशोक द्रवित हो गया तथा हिंसा और युद्ध नीति का सदा के लिये त्याग कर दिया। युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपना लिया और अपना सारा जीवन बौद्ध धर्म को समर्पित कर दिया। इसी कारण विश्व इतिहास में महान स्थान प्राप्त है। अशोक की बौद्ध धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार—प्रसार के लिए अनेक कार्य किये जिसके कारण यह धर्म देश—विदेश में लोकप्रिय हो गया।

**मूल शब्द :** बौद्ध धर्म, इतिहास, कलिंग विजय, रक्तपात।

### भूमिका

बौद्ध धर्म की स्थापना महात्मा बुद्ध ने की थी। ये शाक्य वंशीय राजकुमार थे। इनकी सांसारिक मोह—माया में कोई रुचि नहीं थी। अतः इन्होंने सच्चे ज्ञान की प्राप्ति के लिये गृहस्थ जीवन से संन्यास ले लिया। 49 दिन की घोर तपस्या के बाद बिहार के गया में वह वृक्ष के नीचे इन्हें सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई। और सिद्धार्थ 'बुद्ध' कहलाये। सारनाम में इन्होंने अपना प्रथम उपदेश दिया। गृह त्याग महाभिनिष्क्रमण और प्रथम उपदेश 'धर्म चक्र प्रवर्तन'

कहलाया। अपना शेष जीवन बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में लगा दिया। बाद में बौद्ध भिक्षुओं और सम्राट अशोक जैसे उत्साही शासकों के प्रयासों से बौद्ध धर्म भारत ही नहीं, अपितु विदेशों में भी लोकप्रिय हो गया।

## शोध प्रविधि

यह शोध पत्र द्वितीय आंकड़ों पर आधारित है। इतिहास विषय की संदर्भ पुस्तकों से शोध सामग्री एकत्रित की गई है। शोध पत्र के लिये ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग करते हुए शोध सामग्री को व्यवस्थित किया गया है।

## शोध के उद्देश्य

शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

- क्र भारत में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन।
- क्र बौद्ध के प्रचार-प्रसार में सम्राट अशोक का योगदान जानना।
- क्र सम्राट अशोक के धर्म की आज के समय में महत्व को समझना।

## बौद्ध धर्म का विकास

भारत में पर्याप्त मात्रा में बौद्ध साहित्य उपलब्ध है। जैसे त्रिपिटक, जाटथ कथाएं और बाद में बौद्ध विद्वानों द्वारा लिखा गया प्रचुर और समृद्ध बौद्ध साहित्य। बौद्ध धर्म व बौद्ध साहित्य के विकास में बौद्ध संगीतियों का अहम स्था है जो विभिन्न सम्राटों के समय पर सम्पन्न हुई। ये चार संगीतियां पांचवीं सदी पूर्व से 7 सदी के मध्य सम्पन्न हुई। इनमें जहां इन त्रिपिटकों की रचना हुई, वहीं पर बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार व बौद्ध संघ को सुसंगठित करने के प्रयास भी होते रहे। वास्तव में त्रिपिटिक व अन्य बौद्ध साहित्य से हमें बुद्ध के जीवन, उपदेश अन्य बौद्ध भिक्षुओं के जीवन, विभिन्न सम्राटों के बौद्ध में

योगदान, तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दषा को समझने में सहायता मिलती है।

## बौद्ध धर्म का प्रचार

बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में बौद्ध भिक्षुओं, बौद्ध विहारों व बौद्ध संघ का महत्वपूर्ण योगदान है। बौद्ध संघ एक महत्वपूर्ण संगठन था। बौद्ध भिक्षु प्रज्ञ, प्रखर व उत्साही विद्वान थे। उन्होंने देश-विदेश में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विदेशों में भिक्षुओं के साथ-साथ व्यापारियों ने भी भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म के प्रचार में काफी योगदान दिया। भारत के विभिन्न सम्राटों अशोक, कनिष्क, हर्षवर्धन, धर्मपाल आदि ने जिन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था, ने देश-विदेश में बौद्ध धर्म के विकास और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

## अशोक द्वारा बौद्ध धर्म अपनाना व प्रचार

बौद्ध धर्म अपनाने से पूर्व ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। कल्हण के अनुसार अशोक पूर्व में शिव भक्त था। उसके अन्दर अन्य राजाओं की तरह जैसे शिकार करना, माँस खाना आदि व्यवसन थे। लेकिन कलिंग युद्ध के बाद अशोक में अद्भूत परिवर्तन आये और उसने बौद्ध धर्म को अपना लिया उससे युद्ध न करने का निश्चय किया। उसने शिकार करना व माँस खाना भी बन्द कर दिया। दीपवंश और महावंश के अनुसार अशोक को उसके शासन के चौथे वर्ष निग्रोध नामक भिक्षु ने बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। उसके बाद मोग्गालिपुत्ततिस्स के प्रभाव में आकर पूर्ण रूप से बौद्ध हो गया। दिव्यवदान उसको बौद्ध बनाने का श्रेय उपगुप्त को देता है। अशोक बौद्ध धर्म अपनाने के बौद्ध तीर्थों की यात्रा करने लगा। अशोक अपने शासन के दसवें वर्ष सर्वप्रथम बौद्ध गया की यात्रा पर गया। अपने अभिषेक के 20वें वर्ष लुम्बिनी ग्राम गया।

उसने लुम्बिनी ग्राम को कर मुक्त घोषित किया और केवल 1/8 भाग कर के रूप में लेने की घोषणा की। अशोक के बौद्ध होने का सबसे स्पष्ट और सबल प्रमाण भाब्रु (बैरात-राजस्थान) से प्राप्त लघु-षिला लेख है। अशोक स्पष्ट अपने को बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति से समर्पित कहता है। अन्य अभिलेखों से भी इसकी पुष्टि होती है।

सर्वप्रथम अशोक ने 'धम्म यात्राएं' शुरू की। वह लुम्बिनी, गया, सारनाथ, श्रावस्ती और कुशीनगर आदि बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्राएं की। -रूमिन देई स्तम्भ लेख इसका प्रमाण है।

सम्राट अशोक के समय 251 बी.सी. में, पाटलिपुत्र में तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ। 'कथावत्थु' नामक बौद्ध ग्रंथ की रचना हुई।

अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये 'धर्म महामात्र' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की। इसका प्रमाण पांचवें षिलालेख से मिलता है।

अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये विदेशों में प्रचारक भेजे। महारक्षित, महादेव, सोन, उत्तरा, महेन्द्र व संघ मित्रा प्रमुख हैं। इसके फलस्वरूप ही बौद्ध धर्म विष्व के अनेक देशों में लोकप्रिय हो गया। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये अनेक बौद्ध विहारों और स्तूपों का निर्माण करवाया तथा विभिन्न स्थानों पर अभिलेख खुदवाये ताकि जनता को बौद्ध धर्म की जानकारी प्राप्त हो सके।

## अशोक का 'धम्म'

'धम्म' शब्द संस्कृत के 'धर्म' शब्द से बना है। इसमें सभी धर्मों के अच्छे सिद्धांतों का संग्रह है। ये नैतिक सिद्धांत ही अशोक के 'धम्म' का सार हैं। अशोक के 'धम्म' के विषय में विभिन्न इतिहासकारों में मतभेद है। कोई उसको बौद्ध धर्म तो कोई ब्राह्मण धर्म तो कोई इसको अशोक का आविष्कार मानता है।

षिलालेख-12 में कहा गया है कि बौद्ध धर्म ही सभी धर्मों का सार है। कलिंग विजय के बाद अशोक ने घम्म विजय की नीति अपनाई। अशोक का धर्म सार्वभौमिक धर्म था जो आज भी प्रासंगिक है। इसके प्रमुख सिद्धांत हैं :-

- क्र अपने से बड़ों का सम्मान और छोटों के प्रति स्नेह।
- क्र अपने माता-पिता व गुरु के प्रति।
- क्र दासों व नौकरों से अच्छा व्यवहार करना।
- क्र सदैव सत्य बोलना।
- क्र आत्म-परीक्षण द्वारा दोषों को दूर करना।
- क्र अहिंसा का पालन करना।
- क्र सभी धर्मों का सम्मान करना।
- क्र मनुष्य को पापरहित और निष्काम से कर्म करने चाहिये ताकि मृत्यु के बाद मोक्ष मिल सके।

### **घम्म का महत्व**

अशोक विष्व इतिहास में प्रथम शासक है जिसने अपनी प्रजा के इह लौकिक व पारलौकिक कल्याण का प्रयास किया। उसने सत्य व अहिंसा के पालन पर बल दिया उसने लोगों को निष्काम व पाप रहित जीवन के लिये प्रेरित किया कलिंग युद्ध के बाद स्वयं भी इन सिद्धांत का पालन करके अपनी प्रजा को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अशोक ने बौद्ध धर्म का जहाँ स्वयं पालन किया वहीं देश-विदेश के लोगों को भी प्रेरित किया। जनता ने उनकी प्रेरणा को ग्रहण किया। सभी धर्मों के लोग प्रेम व समन्वय से रहने लगे। अतः अशोक द्वारा किये गये जनप्रिय कार्यों के कारण ही उसे भारतीय इतिहास में अशोक महान कहा गया है।

## निष्कर्ष

सम्राट अषोक का भारतीय इतिहास में अद्वितीय स्थान है। अषोक की महानता की पुष्टि अषोक के विभिन्न अभिलेख करते हैं। अषोक विष्व का प्रथम शासक है जिसने कलिंग में विजय प्राप्त के बाद भी विजय अभियान त्याग कर अहिंसा की नीति का पालन किया। अषोक ने इस युद्ध के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में शेष जीवन लगा दिया। वर्तमान में बौद्ध धर्म विष्व के अनेक देशों में लोकप्रिय है। सम्राट अषोक 'घम्म' की शिक्षाएं वर्तमान समय में बहुत ही प्रासांगिक है। यदि इनका पालन किया जाये तो विष्व की सभी समस्याओं जैसे आतंकवाद, नक्सलवाद, तनाव तथा हिंसा से मुक्ति मिल सकती है।

## संदर्भ सूची

- क्र प्रो. डी.आर. भण्डारकर (1960), अषोक, एस. चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली—जालन्धर ।
- क्र षिषिट कुमार पाण्डा (1999), पॉलिटिकल एण्ड कल्चरल हिस्ट्री ऑफ ओडिषा ।
- क्र कैलाष खन्ना (2010), प्राचीन भारत, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ. 117 ।
- क्र द्विजेन्द्र नारायण झा (2000), प्राचीन भारत, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पड़ताल, ग्रन्थ षिल्पी, दिल्ली, पृ. 77 ।
- क्र डी.एन. झा (2005), प्राचीन भारत : एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिषर्स, नई दिल्ली, पृ. 42 ।
- क्र प्रशांत गौरव (2009) प्राचीन भारत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 174 ।
- क्र मिथिला शरण पांडेय (2001) प्राचीन भारत की सामाजिक संस्थाएं, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली ।